शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एकांत श्रीवास्तव के काव्य की भाषा और लोकतत्व

टिकेंद्र कुमार यदु (शोधार्थी)
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
डॉ.देशबन्धु तिवारी (शोध निर्देशक)
प्राचार्य, साईं महाविद्यालय
भिलाई, छत्तीसगढ़, भारत
डॉ.अभिनेष सुराना (सह शोध निर्देशक)
शा.वि.या.ता.स्व. महाविद्यालय
दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

कविता का स्वरूप

भाषा अभिव्यक्ति का एक माध्यम है और भावों को प्रकाशित करने का साधन भी है। एकांत की कविताएं अनुभवजन्य और अपनी परिस्थितियों की उपज है। इसे साधने के लिए अभिव्यक्ति की ईमानदारी, अभिव्यक्ति कौशल और जो साहस चाहिए वह एकांत के व्यक्तित्व और काव्य का हिस्सा है। कवि के ही शब्दों में केवल काव्य विषयों के आधार पर किसी को कवि होना होता तो अनेक लोग कवि हो गए होते। विषय वस्तु और विचार की ईमानदारी बहुत आवश्यक है लेकिन कविता प्रथमत: और अंततः भाषा का चमत्कार है। भाषा की अनूठी भंगिमा ही कविता है। वरना अनुभव तो एक कृषक के पास अधिक खरे हैं, कवि के पास उतने नहीं, पर कृषक पर कविता स्वयं कृषक नहीं लिख सकता। कवि ही लिख सकता है। स्पष्ट है कि अनुभव की अपेक्षाकृत विपन्नता के बावजूद भाषा संपन्नता ही कवि को कवि बनाए रखती है। भाषा संपन्नता अर्थात कहने की विशिष्ट शैली, कथन की अनूठी भंगिमा।"[1]

सहज-सरल सी दिखने वाली उनकी कविताओं की तह में अनुभव की कई परतें खुलती दिखाई पड़ती हैं। भाषा के प्रति एकांत बेहद सजग कवि हैं। उनका मानना है कि काव्य भाषा को बहुत समर्थ और ताकतवर होना चाहिए, तभी कविता भी प्रभावशाली बनेगी।

एकांत ने भाषाई संस्कार के बारे में अपने साक्षात्कार में बताया है कि "भाषा मैंने अपनी धरती और उसमें बसने वाले उन लोगों से सीखी, जिनके पैर आज भी धूल मिट्टी से सने हुए हैं। मैंने उन लोगों से भाषा सीखी। मेरी मां बुंदेलखंड की थी, उनकी भाषा में बुंदेलखंड के बहुत सारे शब्द आते हैं, जैसे नाली को नारदा, कमर में बच्चों को गोद लेने को कंइया कहती थी, चांदनी रात को जुंधैयां रात बोलती थीं। आज भी वो शब्द मुझे याद आते हैं। ये जो पारिवारिक संस्कार हैं कि बच्चा सबसे पहले भाषा अपने घर

पर सीखता है, मां से भाषा सीखता है, इसे ही मातृभाषा कहते हैं। हमारे घर-परिवार में जहां एक तरफ शुद्ध हिंदी थी और दूसरी तरफ छत्तीसगढ़ी। आपस में हम भाई-बहन और माता-पिताजी से शुद्ध हिंदी में बात करते थे और दादी से छत्तीसगढ़ी और हिंदी दोनों ही भाषा में बात करते थे।"[2] प्रत्येक कवि की अपना मौलिक स्वभाव होता है। एक मौलिक कवि अपनी काव्य यात्रा का चयन स्वयं करता है। एकांत का काव्य मार्ग स्वयं खोजा हुआ है चाहे वह जोखिम भरा, उबड़-खाबड, अनगढ़ ही क्यों न हो। यथार्थ अभिव्यक्ति तभी संभव है जब रचनाकार उसी भाषा का प्रयोग करे, जिन जीवन संदर्भों के सुख-दुख, हर्ष-विषाद, संघर्ष-यातना को वे प्रकट करना चाहते है, इस कला में एकांत श्रीवास्तव एक सक्षम साहित्यकार है। एकांत अपने ग्रामीण जीवन अनुभव को लोक भाषा में रचते हैं।

एकांत के काव्य की भाषा और लोक तत्व

मातृ प्रदेश छत्तीसगढ़ का लोक जीवन एकांत की मूल काव्य भूमि है। यहां के लोक जीवन में गहरी आस्था और विश्वास उनके काव्य में लोक भाषा में वर्णित एवं चित्रित है। एकांत की भाषा एवं लोक संदर्भो के संबंधों को व्यक्त करने में उनकी कुछ काव्य पंक्तियां सक्षम है :

"बारी के बीच म कुंदरा
कुंदरा म जठना
लउठी अउ कंडील
बटकी म बासी
पताल के चटनी
झबरा कुकुर घलो
राखथे बारी।"[3]

एकांत जीवन के वृहत्तर क्षेत्र से शब्दों का चुनाव करते हैं। लोक जीवन के ठेठ, अनगढ़, देशज, लोकोक्तियां और लोक मुहावरे आदि उनकी कविताओं में सहज रूप से आए हैं। कविता में लोक व्यवहार की सहज-सरल भाषा की प्रतिष्ठा तथा उसमें निहित संभावनाओं की पड़ताल, अनगढ़, ठेठ और काव्य संस्कारों से रहित शब्दों को काव्यात्मक स्वरूप देना कवि की लोक अभिरुचि और अनुराग का उजाला प्रमाण है। एकांत की कविताओं में छत्तीसगढ़ी, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषाओं का प्रयोग देखने को मिलता है। उनका बचपन गांव में बीता इसलिए खेती-किसानी, लोक जीवन के संस्कार उनकी चेतना में स्थायी भाव की हैं। उनकी कविता का संसार वस्तुतः लोक सामान्य जीवन ही है और उनकी लोकप्रियता का कारण भारतीय जन के प्रति मानवीय होना है। मुक्तिबोध ने लिखा है, "मेरी उनसे पटती है/ जिनकी रातें सिर के नीचे/ ईंट रख सोते हुए कटती है। मनुष्य के साथ ऐसा जुड़ाव ही कवि की चेतना में ऊर्जा भरता है और उन्हें जनसाधारण के जीवन से जोड़े रखता है। 'लिखने से ज्यादा' में कविता लिखने से ज्यादा जरूरी प्यासे को पानी पिलाना और सूखते पौधे को पानी देने की आवश्यकता पर बल देते हैं। यही पानी की बूंद ही अंततः कविता है :

"लिखने से ज्यादा जरूरी था
एक प्यासे को पानी पिलाना
सूख रहे थे बेला के पौधे उनकी पपड़ायी मिट्टी वाली
जड़ों को सींचना ज्यादा जरूरी था।"[4]

समाज में रहते हुए एकांत अपनी बाहरी और भीतरी दोनों आंखें खुला रखते हैं। बाहरी आंख से दुनिया को देखते हैं और भीतरी आंख से लोक यातना, संघर्ष, वेदना, आहत मानवीय मूल्य के स्वर का बोध करते हैं। और हृदय की शीतलता को प्रतिरोध की आग में रूपांतरित करते हैं तब

ऐसी कविता संभव होती है। उनकी कविताओं में अनेक शब्द सीधे लोक (छत्तीसगढ़ी.लोक) से उठाए गए हैं जैसे, सीला कटोरा, टिकुली, नचकर, बाटुली, सुकवा, टुनटुनाती कंदील, खलिहान, हाट, टिटिहरी, कुंदरा, बारी, अंदहन, पताल, लउठी कातिक, पसहर, पाख, लिथड़ा, बहु रिस, बीजहा, छीतथे, सल्हई, नूनचरा, भात, बिलम, बइला, मितान, बांबी, मछरी, बिक्कट, दाहरा, भुइया, सिमसाम, मनुख, धुर्रा, लबारी, गुखरू, लहु ट कौहा, सिपचा, घलो, लरई, झगरा, रद्दा, पथना, फुल बबा, सौखी, लोचनी, डोंगरी, दुआर, बटकी, बासी, चानीए असोढिया, बंबरी, महतारी, चूरथे, मनिहारी पबरीत, मुहाटी, उज्जर आदि। इनमें से कुछ शब्द आज लुप्त हो चुके हैं और कुछ लुप्त हो रहे हैं। ये शब्द और उनकी अनुगूंज हमारी आत्मा के शून्य को संगीत से भर देती है। विगत दशकों में घटित विश्वव्यापी परिवर्तन से छत्तीसगढ़ के गांव अलग नहीं रहे हैं। गांवों में भी अब गांव कम ही रह गया है। कहना न होगा कि एकांत की कविताएं स्मृतिहीनता के दौर में स्मृति लोक में बसे गांव को खोजने का भागीरथ प्रयास है :

“यहां सोई है
दो आंखें
गहरी नींद में
× × × ×
हम
इस पृथ्वी पर
इन आंखों के
सपने बनकर बचे हैं।”[5]

एकांत का छत्तीसगढ़ी कविता संग्रह ‘अंजोर’ कवि की जन्मभूमि छत्तीसगढ़ एवं यहां की लोकभाषा के प्रति लगाव-जुड़ाव और प्रतिबद्धता को प्रमाणित करता है। एकांत जितने लोकराग के कवि हैं, उतने ही प्रकृति लीला और प्रकृति सौंदर्य के भी। प्रकृति प्रेम कविता को लोकांचल की महक से समृद्ध कर देती है और तब कवि लोकभाषा में प्रगीत चेतना को संभव करते प्रतीत होते हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ी कविता को मार्मिक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर लोकभाषा में ही मौखिक विधि से भिन्न एक नया काव्य संस्कार दिया। और इस तरह अपनी मूल काव्य भूमि के कुछ और भी नजदीक आए हैं। हिंदी के साथ छत्तीसगढ़ी कविताओं में भी शब्दों की मितव्ययता और कसावट उनकी विशिष्टता है। वर्षा आगमन पर ऋतुसंधी का सहज बोध एकांत को एक किसान की तरह होता है और कविता में पूर्व संचित संस्कार सहजता से फूट पड़ते हैं। इसी प्रसंग में उनकी लोक जीवन पर आधारित कविता ‘अषाढ़’ याद की जा सकती है। अपनी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी में एकांत ने वर्षा ऋतु में प्रकृति व लोक जीवन में होने वाले परिवर्तन और आनंद के क्षण का मार्मिक चित्रण किया है। कवि की सूक्ष्म सौंदर्य दृष्टि, एन्द्रियता, ग्राम्य प्राकृतिक परिवेश से लगाव की अनुभूति का व्यंजक है। कवि की लोकोन्मुखता कविता में सर्वत्र विद्यमान है :

“फूल गइस
पान अइस
दिन बहु रिस परसा के
सरी रात झड़ी
अब उगे हे घाम
चलथे नागर
छीतथे बीजहा किसान खार म
दिन आ गे रे बतर के कोन्हों खीरीए कोन्हों जरई
कोन्हों रोपा के करथे तइयारी
सुत जहीं बीज मन भुइया तरी
जागही त नवा जनम
नवा चोला।”[6]

एकांत अपनी धरती पर पकड़ बनाए हुए हैं। वे छत्तीसगढ़ की धरती के कवि हैं। अपनी धरती से प्रेम करने वाले कवि हैं, स्थानीयता के कवि हैं। स्थानीयता उनकी कविता की प्रमाणिकता सिद्ध करती है। जो उन्हें रीढ़हीन-जड़हीन होने से बचाती है। वस्तुतः यही कारण है कि उनकी कविता में छत्तीसगढ़ का लोक जीवन चप्पे-चप्पे पर उपस्थित है :

"एक ठोकर भूख
की
दूसरी अपमान की
एक मार धोखे की
दूसरी अकाल की
एक चाबुक धूप की
दूसरी बौछार की
एक दुख
दो दुख
तीन दुख
तुम गिन नहीं सकते।"[7]

एकांत के रचना कर्म में ठेठ जीवन, प्रकृति दर्शन, अक्खड़ बोली-बानी, उबड़-खाबड़ परिवेश से समृद्ध लोक जीवन के चरित्र बहुत मिलते है। लेकिन उसका प्रभाव, उसकी व्याप्ति स्थानीयता की सीमा को लांघकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय हो गई है। 'कन्हार' शीर्षक कविता में छत्तीसगढ़ के आम आदमी की वेशभूषा के साथ छत्तीसगढ़ के मानचित्र और लोक जीवन में प्रचलित भाषा में वेशभूषा के नाम का उल्लेख मिलता है। यथा सलूखा, भंदई, साफी, खुंसी हुई बीड़ियां आदि छत्तीसगढ़ की आम औसत आदमी की पहचान है। एकांत की हिंदी कविताओं में भी छत्तीसगढ़ के लोक जीवन और लोक भाषा की गूंज और अनुगूंज को सुना जा सकता है। छत्तीसगढ़ की लोक भाषा की महक को महसूस भी किया जा सकता है।

"कहीं भी हो यहां के आदमी
वही धोती मिलेंगे पहने हुए
बड़ी-बड़ी जेबों वाला रंगीन सलूखा
पांव में भंदई
कांधे पर साफी
और कान में खुंसी ठूठी बीड़ियां
सिर्फ सात जिलों में नहीं छत्तीस टुकड़ों में बंट गया है यह छत्तीसगढ़।"[8]

एकांत श्रीवास्तव छोटी कविताओं के बड़े और गंभीर अर्थ वाले कवि हैं। ऐसी कविताएं आकार में छोटी जरूर है। अर्थ की अपार गहराई और अर्थ का विस्तार उनकी विशेषता है। वे लोक भाषा और लोक चेतना के कवि हैं। लोक उनकी कविताओं को दीए की तरह आलोकित किए हुए हैं। उनकी अनेक कविताओं की भाषा, शब्द विन्यास, शैली, कहन आदि लोक जीवन के मेल-मिलाप, संपर्क से निर्मित है :

"फूलों से भरा है घर
कांटों से मन
कनकी गेंदा, चंऊर गेंदा, चंदैनी गेंदा
बोइर कांटा, बम्बरी कांटा, मोखरा कांटा
रोशनी से भरा है आकाश
भीतर उतरती है रात।"[9]

एकांत का काव्य विस्तृत और वैविध्यपूर्ण है। निस्संदेह एकांत आत्मालोचना करने वाले कवि हैं। उनकी 'छाप' कविता को इसी प्रसंग में याद किया जा सकता है। कवि यथार्थ देखे हुए या अनुभूत सत्य पर अधिक विश्वास करता है। इसीलिए मैं, मैंने, मुझे, मेरे आदि सर्वनाम का प्रयोग करता है, क्योंकि देखने के लिए कोई कर्ता भी तो चाहिए। यहां कवि की व्यक्तिगत चेतना, लोक चेतना में प्रवेश कर जाती है और नये

मानवीय मूल्य के संस्कार के साथ लोक की छवियों को प्रस्तुत करती है। कवि का मैं सबके हम में परिवर्तित हो जाता है, वह जन का ही प्रतीक है और समूह के 'हम से कहीं पृथक नहीं है :

"मुरम वाली जमीन पर नंगे पांव
चलता हूं
तो तलवे लाल हो जाते हैं धरती अपना रंग छोड़ देती है
कैसा मैं मनुष्य हूं
कि कहीं छोड़ नहीं पाता अपनी छाप
अपने मनुष्य होने की सुगंध
कहीं छोड़ नहीं पाता
धरती अपना रंग छोड़ देती है।"[10]

एकांत ग्रामीण पृष्ठभूमि से चलकर आए हैं। वहां की लोक चेतना उनके खून में हैं, उनकी रग-रग में रचा-बसा है। इसका स्वच्छ प्रमाण उनकी कविताओं में बार-बार आने वाला घर, खेत, खलिहान, किसान और गांव को लेकर उनकी संवेदनशीलता है. :

ष्यह क्या बो दिया काल ने खेतों में
बीजों की जगह
यह कैसा अरण्य सुनसान का
उगा हुआ खेतों में
हवा में
भीगी हुई जड़ों की सुगंध नहीं
केवल राख है उड़ती हुई
अब बैल
हुमरते हुए घर नहीं लौटते अब खेतों से
पंडुकों के गाने की आवाज नहीं आती।"[11]

एकांत श्रीवास्तव भारतीय अस्मिता और लोक सम्पन्नता के कवि हैं। कवि के दृष्टिकोण से गुजरते हुए यह महसूस किया जा सकता है कि उनकी चिंता कविता के विकास को लेकर कितना है, इस संबंध में उनकी पंक्तियां ध्यान आकृष्ट करती है, "एक अच्छी कविता की पहचान भी यही है और गहरे प्रतिमान भी। भुला दी गई चीजें कुछ और हो, कला नहीं हो सकती। रचना-रचनाकार के भावबोध से आरंभ होती है और भावक के भावबोध में भी लंबी यात्रा करती है। तुलसी, कबीर, मीरा और सूर के संदर्भ में हम देखते हैं कि भावबोध में चलने वाली यह यात्रा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। लोक में कला की, रचना की मौखिक परंपरा भी होती है। आज श्रुति की जगह स्मृति ने ले ली है।"[12]

ग्रामीण जीवन की स्मृतियां उनके मन-मस्तिष्क में बसी हुई हैं और वे उनके रोम्रोम में भीतर तक डूबे हुए हैं। उनकी रचनाओं में लोक केवल पृष्ठभूमि का काम ही नहीं करता है अपितु चित्र, रंग, रेखाएं, भाषा, अर्थ, भाव और भाव-भूमि भी लोक के ही उभरते हैं, उनके यहां कृत्रिमता का नामोनिशान नहीं है, सर्वत्र स्वाभाविकता विद्यमान है, जो यथार्थ से भी गहरा यथार्थ बोध का प्रमाण है। यह कहना गलत न होगा कि लोक उनके रक्त में लगभग उतना ही प्रवाहित है जितना कि उनके समानधर्मा कवियों जैसे त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल और नागार्जुन में है। आमजन के सुख-दुख, यातना और संघर्ष को अपनी भाषा में कहना एकांत की काव्यगत विशेषता है। इनकी कविता लोक-संस्कृति के इतने करीब है कि उसी का विकसित रूप प्रतीत होती है :

"कहां गए बच्चे और उनके सारे खेल
रेस-टिप, राजा-रानी, गुल्ली-डण्डा, तिरी-चंगा और अत्ती-पत्ती
देखो तो, सूखी क्यारी में बिना रंग
और गन्ध के ये फूल
किस पवन ने चुरा ली इनकी महक

किस धूप में उड़ गये इनके रंग
अब कोई नहीं दौड़ता गिरता यहां
गली में धूल उड़ती है और पीपल के पत्ते।"[13]

एकांत की कविताओं में प्रभावशाली लोक भाषा का प्रयोग मिलता है। कहने की जरूरत नहीं कि कवि की जीवन दृष्टि लोक जीवन और समाज से उनकी कविता के संबंध को परिभाषित करती है। एकांत की कविता का असली सौंदर्य लोक संवेदनाओं में है। कविता में जन पक्षधरता के साथ-साथ काव्यात्मकता भी बनी रहे इस विषय में एकांत का अनुभवी व्यक्तित्व असंदिग्ध है :

"एक पुरुष थककर टिकाता था अपनी पीठ
उस दीवाल से जो गिर गयी थी
एक स्त्री हताशा में
उससे लिपट कर रोती थी
जैसे वह दीवाल नहीं
उसके बाबुल का सीना हो
एक तरफ की दीवाल गिर गई थी
फिर भी घर था
और साबुत था।"[14]

एकांत की कविताओं में छत्तीसगढ़ अपनी समग्रता के साथ रचा-बसा है। यह सारा रचाव - बसाव कवि की अभिव्यक्ति में है और हृदय में भी।

निष्कर्ष

एकांत को प्रायः प्रकृति और गांव का कवि कह दिया जाता है। यह सत्य भी है कि गांव से आए कवि के रूप में उनकी पहचान अवश्य बनी किंतु एकांत की कविताएं केवल गांव एवं प्रकृति पर आधारित नहीं है। एकांत की कविताओं का विषय समग्र धरती रहा है। उनकी कविता में पारिवारिक संबंधों की आत्मीय गंध, प्रेम, स्नेह, स्त्री, बच्चे, निम्नमध्य वर्ग का सुख-दुख, शोषण, संघर्ष, यातनाएं और विरोध सब कुछ एक साथ उपस्थित है। युग की केवल बड़ी-बड़ी घटनाएं ही कवि को व्यग्र नहीं करती अपितु दैनिक जीवन के छोटे-छोटे दृश्य भी कवि संवेदना से एकाकार होकर कविता में व्यक्त होते देखे जा सकते हैं। अनुभव की जीवंतता के कारण एकांत की कविताएं जीवन और समाज के यथार्थ के चित्रण साथ समाज में व्याप्त विसंगतियों से मुक्ति का प्रयास करते दिखाई देती है। एकांत का यह अनुभव संसार ग्राम्य परिवेश से शुरू होकर देश की सीमाओं तक ही बद्ध नहीं है, बल्कि यहां तो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घटने वाली घटनाओं, संवेदनाओं और संभावनाओं के विस्तृत संदर्भ आसानी देखे जा सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 श्रीवास्तव एकांत, बढ़ई, कुम्हार और कवि, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम सं. 2013, पृष्ठ 19

2 श्रीवास्तव एकांत, मेरे साक्षात्कार, प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ 123

3 श्रीवास्तव एकांत, अंजोर, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 101

4 श्रीवास्तव एकांत, सूरजमुखी के खेतों तक, वाणी प्रकाशन ,नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ 22

5 श्रीवास्तव एकांत, अन्न है मेरे शब्द, मां की आंखें, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली 2013, पृष्ठ 72

6 श्रीवास्तव एकांत, अंजोर, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022, पृष्ठ 55

7 श्रीवास्तव एकांत, सूरजमुखी के खेतों तक, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2024, पृष्ठ 119

8 श्रीवास्तव एकांत, बीज से फूल तक, कन्हार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003, पृष्ठ 125

9 श्रीवास्तव एकांत, सूरजमुखी के खेतों तक, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करणर, 2024, पृष्ठ 97

10 श्रीवास्तव एकांत, कवि ने कहा, (छाप) किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृष्ठ 06

11 श्रीवास्तव एकांत, सूरजमुखी के खेतों तक वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2024, पृष्ठ 62

12 श्रीवास्तव एकांत, बढ़ई, कुम्हार और कवि, किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम सं. 2013, पृष्ठ 200

13 श्रीवास्तव एकांत, सूरजमुखी के खेतों तक वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करणर, 2024, पृष्ठ 63

14 श्रीवास्तव एकांत, सूरजमुखी के खेतों तक वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2024, पृष्ठ 78